पेरिस
दिसम्बर १०, २००६

सन्देश संख्या १०६

सिएटल के क्रियावान 'जो' को एक पत्र

तुम्हारे निजी पारिवारिक जीवन की कठिन परिस्थिति तथा सिएटल (अमेरिका) एवं पेरिस (फ्रांस) के मध्य विशाल दूरी और समयान्तराल के बावजूद तुम्हारे साथ दूरभाष पर आनन्दपूर्ण वार्ता हुई । जब शिवेन्दु ने कहा–''आकाश के नीचे प्रत्येक समस्या का समाधान भी है और नहीं भी'' तब कितनी सुन्दरता से तुम्हारे शरीर में हँसी खिल उठी थी और हर्ष का विस्फोट हो गया था ।

अस्तित्व के अभिव्यक्त आयाम की प्रत्येक प्रक्रिया अस्थायी है । वह प्रारम्भ होती है, कुछ समय तक रहती है और अन्ततोगत्वा समाप्त हो जाती है। यहाँ तक कि तारे भी ब्रह्माण्ड में जन्म लेते हैं, लाखों वर्ष तक अस्तित्व में बने रहे हैं और अन्त में महाशून्यता (ब्लैक होल) में विलीन हो जाते हैं । प्रत्येक वस्तु के लिए मध्य की कालावधि भिन्न–भिन्न होती है ।

क्या तुम द्रष्टा और दृश्य के विभाजन से मुक्त रहकर नश्वरता पर ध्यान कर सकते हो ? तब तुम पाओगे कि कहीं भी कुछ भी व्यक्तिगत नहीं है । वस्तुतः इस ध्यान की अद्‌भुत गहराई में समझदारी की ऊर्जा इतनी प्रचण्ड होती है कि आसक्ति या विरक्ति का अनुभव करने वाला विभेदकारी, भावुक एवं विषयासक्त ''मैं'' का पूर्णतया नाश हो जाता है और तभी व्यक्ति अचानक सर्वव्यापी चैतन्य का स्पर्श पाता है और शायद वही आधार है जिस पर सृष्टि, स्थिति और लय की अन्तहीन लीला चलती रहती है । किन्तु चैतन्य स्वयं अनभिव्यक्त और अज्ञेय रहता है । क्यों?

प्रत्येक वस्तु जिसका प्रारम्भ और अन्त है, जो सीमित और अस्थायी है, वह अभिव्यक्त और ज्ञेय होता है । इसलिए जिसका प्रारम्भ और अन्त नहीं है, जो कभी जन्म नहीं लेता और न ही मरता है, जो असीमित और कालातीत है, जो जीवन और चैतन्य है उसे अवश्य ही अनभिव्यक्त और अज्ञेय होना चाहिए। यह सत्य ही ईश्वर है । किन्तु ईश्वर सत्य नहीं है, यह तो केवल जड़बुद्धि एवं मिथक मन की मिथ्या रचना एवं कल्पना है । इस मिथक मन के घटक अवयव हैं – लोभ, अपराधबोध एवं अपराधबोधग्रस्तता; भय, कल्पना एवं कुंठा; अवसाद, भ्रांति एवं निर्भरता और विश्वास पद्धति, धर्मान्धता एवं क्रूरता ।

इसलिए जब सत्य ईश्वर के रूप में तुम्हें विद्युत तड़ित की तरह झटका देता है तब तुम्हारे शरीर, रक्त–कोशिकाएँ और अस्थिमज्जा द्वारा जानना घटित होता है किन्तु कोई जानकारी नहीं होती । तब तुम्हारा जीवन अनुभव रहित बोध को उपलब्ध होता है । यही मन से पूर्ण मुक्ति है यद्यपि स्मृति तब भी दैनिक कार्यों के सम्पादन के लिए अत्यन्त तीक्ष्णता से एवं सम्यक ढंग से काम करती रहती है ।

अतः ईश्वर के लिए, कभी भी 'ईश्वर' पर ध्यान नहीं करो और न ही बौद्ध, जैन एवं साम्यवादियों के 'अनीश्वर' पर या, यहूदी, ईसाई और मुस्लिम के 'एक ईश्वर' पर या, हिन्दुओं के 'अनेक ईश्वर' पर । प्रतिक्षण केवल सत्य के प्रति, 'जो है' के प्रति, नश्वरता के प्रति सजग रहो । तकनीकी दुनिया को छोड़कर अन्य कहीं 'ऐसा होना चाहिए' मत सोचो । सर्वव्यापी चैतन्य (कृष्ण) धारण करता है । यही स्थायी आधार है, अन्य कुछ भी स्थायी नहीं ।

जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ।
(भगवद्‌गीता ७:५)

।। जय श्रीकृष्ण ।।